नैतिक शिक्षा
कक्षा-आठवीं

मुख्य उद्देश्यः

1. छात्र-छात्राओं में ईश्वर भक्ति के भाव उत्पन्न होंगे। उनमें माता-पिता गुरुजनों एवं मानवमात्र के प्रति सम्मान और कृतज्ञता के भाव अंकुरित एवं पल्लवित होने चाहिए।
2. धार्मिक रुचि का संवर्धन एवं अच्छी आदतें व्यवहार में सम्मिलित होनी चाहिएँ।
3. विद्यार्थियों को देश, धर्म, सुसंस्कार, सुशिक्षा एवं विश्व कल्याण के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ बनना चाहिए।
4. वेदादि उत्तम ग्रन्थों के स्वाध्याय के प्रति रुचि जाग्रत होनी चाहिए।
5. वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति आत्मीयता के भाव प्रगाढ़ एवं सुदृढ़ होने चाहिए।
6. देश धर्म की सेवा में जीवन लगाने वाले तथा उत्तम ग्रन्थों की रचना द्वारा ज्ञान का संवर्धन करने वाले महापुरुषों के चरित्र से परिचित होना चाहिए।
7. छात्रों में प्राणिमात्र के प्रति दया, संयम, सदाचरण, उदारता के भाव होने चाहिएँ।
8. परस्पर प्यार से रहना, एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी होना, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना आदि सदाचरण से सामाजिकता की भावना को मूलबद्ध करना।
9. निजी स्वार्थ का त्याग, चारित्रिक उन्नति, सहिष्णुता एवं राष्ट्रीय नियमों के पालन से राष्ट्र की उन्नति में योगदान करना।
10. महामारी, अकाल, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि से पीड़ित लोगों की सहायता करना, उन्हें इससे बचाने के लिए कदम उठाना, इनसे बचने के लिए संबंधित विशेषज्ञों के दिशानिर्देशों का पालन करना और कराना।
11. बदलते परिवेश में सत्य सनातन 'वैदिक धर्म' के प्रति जागरूक होना चाहिए।

संकलनात्मक मूल्यांकन **पूर्णांक-80**

क्र.सं.	पाठ का नाम	अंक विभाजन	कालांश विभाजन
1.	ओ३म् ध्वज (शब्दार्थ, भावार्थ एवं महत्त्व)	2	2
2.	ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम (ओ३म् का महत्त्व, ओ३म् जप के लाभ)	5	3

3.	आत्मबोध–(शब्दार्थ, भावार्थ, कंठस्थीकरण)	2	1
4.	गीता के दो श्लोक (शब्दार्थ, भावार्थ एवं उद्देश्य)	5	2
5.	गायत्री जप का प्रभाव गायत्री मंत्र की महिमा, अर्थ एवं लाभ	5	3
6.	संस्कृत भाषा (आवश्यकता, महत्त्व, उपयोगिता)	5	3
7.	राष्ट्रभाषा : हिन्दी (आवश्यकता, महत्त्व, स्थान, उपयोगिता)	5	3
8.	पञ्च महायज्ञ (नाम, परिभाषा, उद्देश्य, विधि एवं लाभ)	5	3
9.	डी.ए.वी. गान (शब्दार्थ, भावार्थ एवं कंठस्थीकरण)	2	2
10.	योग की पहली सीढ़ी-यम (योग एवं यमों के अर्थ एवं महत्त्व)	5	3
11.	योग की द्वितीय सीढ़ी-नियम नियमों के नाम, अर्थ एवं महत्त्व)	5	3
12.	वर्ण व्यवस्था का स्वरूप (भेद एवं आवश्यकता)	5	3
13.	आश्रम व्यवस्था (भेद, अर्थ, महत्त्व)	5	3
14.	किस दर जाऊँ मैं (भावार्थ एवं कंठस्थीकरण)	2	2
15.	आर्य समाज के नियम (7-10 नियम) (व्याख्या, महत्त्व एवं कंठस्थीकरण)	5	3
16.	सत्यार्थ प्रकाश (अर्थ, महत्त्व एवं सभी समुल्लासों की विषय वस्तु)	6	3
17.	डी.ए.वी. संस्थाएँ (डी.ए.वी. की स्थापना, विशेषताएँ, उद्देश्य एवं योगदान)	5	2
18.	डॉ. मेहरचन्द महाजन (जन्म, शिक्षा एवं डी.ए.वी. में योगदान)	4	3
19.	राष्ट्रीय गीत (शब्दार्थ एवं कंठस्थीकरण)	2	2

अंकों के आधार पर प्रश्नों का वर्गीकरण

क्र.सं.	प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	निर्धारित अंक	कुल अंक
1.	बहुवैकल्पिक	10	1×10	10
2.	अतिलघूत्तरीय	10	2×10	20
3.	लघूत्तरीय	10	3×10	30
4.	दीर्घ उत्तरीय	4	5×4	20
		कुल प्रश्न 34	80	80

आन्तरिक मूल्यांकन **20 अंक**

1. इकाई परीक्षा 5 अंक

   (इकाई परीक्षाएँ तीन होंगी। दो सर्वश्रेष्ठ परीक्षाओं का मूल्यांकन किया जाएगा। जिनके औसत 5 अंक दिए जाएँगे।)

2. बहुविध मूल्यांकन 5 अंक

   (क) अवलोकन / वैकल्पिक

   (ख) वैयक्तिक – योग, ध्यान, सन्ध्या, प्रार्थना आदि

   (ग) सामूहिक – जन्मदिवस, पर्व-त्योहार, शादी की सालगिरह एवं अन्य कोई सामूहिक कार्य।

   (घ) परिचर्चा : महर्षि दयानन्द जी के सैद्धान्तिक विचारानुसार खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा एवं महापुरुषों के जीवन चरित्र

   (ङ) बाह्य गतिविधियाँ – प्रवचन, सत्संग, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण

   (च) अनुशासित दिनचर्या (माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि के आदर्शों का अनुकरण)

3. निवेश-सूचिका (पोर्टफोलियो) 5 अंक

चित्रात्मक गतिविधियाँ–पुस्तक पर आधारित (अध्यापकों के निर्देशानुसार)

(क) चार्ट पेपर पर आर्य समाज के दस नियमों का लेखन।

(ख) योग के अनुसार यम-नियम।

(ग) वर्ण व्यवस्था / आश्रम व्यवस्था

(घ) मेरा आदर्श व्यक्ति

(ङ) हवन में प्रयुक्त आवश्यक वस्तुओं की सूची

(च) कक्षा कार्य / गृहकार्य

4. विषय संवर्धन 5 अंक

(क) योगासन

(ख) पञ्च महायज्ञ (विधि एवं मंत्रोच्चारण)

(ग) वाद-विवाद प्रतियोगिता (संस्कृत भाषा का अध्ययन)

(घ) राष्ट्रभाषा हिन्दी : लेखन

(ङ) प्रेरक प्रसंग–नैतिक मूल्यों पर आधारित

(च) वैदिक सिद्धान्तों के प्रति जागरूकता

निर्धारित पुस्तक :

नैतिक शिक्षा (भाग 8)

(प्रकाशन विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्तृ समिति, नई दिल्ली)